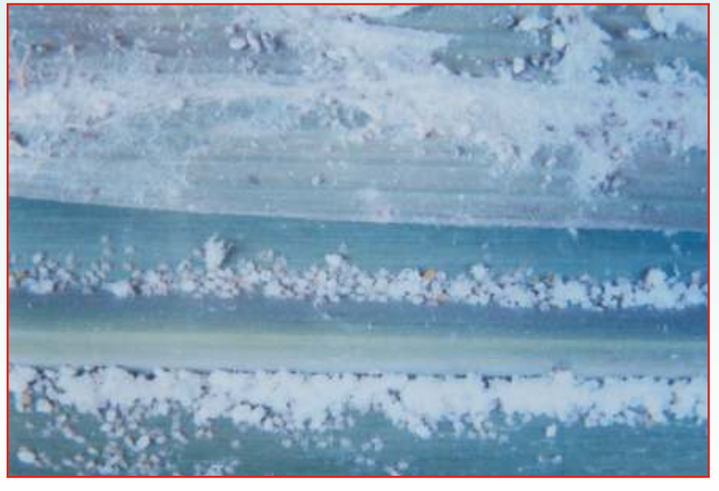

xUu dk Åuh ekg (oyh ,fQM) ,o mldk fu;=.k

सत्यमेव जयते

प्रायोजक :

भारत सरकार

कृषि मंत्रालय

(कृषि एवं सहकारिता विभाग)

गन्ना विकास निदेशालय

आठवाँ तल, हाल संख्या–3, केन्द्रीय भवन, अलीगंज, लखनऊ – 226024 (उ.प्र.)

प्रस्तुतिकरण, चित्रांकन एवं मुद्रण :

निदेशक

भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान

रायबरेली रोड, दिलकुशा, लखनऊ - 226002

xUu dk Åuh ekg (oyh ,fQM) ,oa mldk fu;=.k

xUuk mRiknu e Åuh ekg dh leL;k gky gh e mRiUu gbZ g] tcfd lu 2002 e bl ukf'kdhV dk idki egkjk"V o dukVd e pje lhek ij igp x;kA ;g m".kdfVc/kh; in'kk tl& rfeyukM] vk/kin'k] djy o xqtjkr ,o mik".kdfVc/kh; in'kk tl& mRrj in'k] mRrjkpy o fcgkj e Hkh ik;k x;k gA o"kZ ;g dhV fiNy yxHkx 50 o"kk l iokRrj in'kk tl& ukxky.M] vle] if'pe cxky o fcgkj e ik;k tkrk jgk gA

Åuh ekg Hkkjh l[;k e xUu dh ifRr;k dh fupyh lrg ij e/;f'kjk d fdukj vFkok ijh lrg ij fn[kkbZ iMrh gA bud leg lQn Åuh ekeh inkFk l <d jgr gA ;g ukf'kdhV 'kdjk ;Dr inkFk mRlftr djrk g tk fupyh ifRr;k d Åijh lrg ij Qy tkrk gA bl ij dky jx dh QQn mxu yxrh g tk ifRr;k dh lrg dk dkyk jx inku djrh gA

bl ukf'kdhV }kjk fujrj ifRr;k dk jl plu vkj dky QQn l idk'k l'y"k.k e deh gku d dkj.k xUu dk gkfu gkrh gA ifj.kke Lo:Ik xUu dh c<okj de gk tkrh g vkj 'kdjk dh ek=k 53-0 ifr'kr rd de gk ldrh gA

Åuh ekg d lo)u ij ok;e.My vkj lL; ifØ;k dk iHkko iMrk gA ok; e ueh dh vf/kdrk ,o #d&#d dj o"kk gku d lkFk&lkFk ;fn rkiØe e/;e xe gk rk ekg dh l[;k e of} gkrh gA bld foijhr 'k"d xeh l budh l[;k ?kVu yxrh gA ekg d fy, 20 l 23 fMxh lfYl;l rkiØe vudy gA 15 fMxh lfYl;l l de o 28 fMxh lfYl;l l vf/kd rkiØe] bl dhV ij foijhr iHkko Mkyrk gA

xUu dh l?ku [krh] u=tu dh vf/kd ek=k dk i;kx ,o vf/kd flpkbZ Åuh ekg d lo)u d fy, vudy gA rho ok;ox] ekg d ilkj e lgk;d gkrh gA

Åuh ekg d dbZ ikdfrd 'k= ik; tkr gA bue *डाइफा एफिडिवोरा* ,o *माइ ्रेमस इगोरोटस* cgr iHkkoh ijHk{kh gA yxHkx lHkh dhVuk'kh jlk;u ekg d fu;=.k e iHkkoh gA ijUr bud i;kx l ekg d ijHkf{k;k dh l[;k ij foijhr iHkko iMrk gA Åuh ekg d fu;=.k d fy, lkj.kh u0 1 e mik; fn; x; gA

सारणी नं० 1: गन्ने की बावक व पेड़ी फसल में ऊनी माहू का नियंत्रण

फसल अवस्था	प्रबंधन
बीज का चयन	ऊनी माहू ग्रसित फसल से बीज को न लें। प्रमाणीकृत और माहू प्रतिरोधी प्रजातियों का बीज प्रयोग करना चाहिए।
बीज शोधन	माहू ग्रस्त क्षेत्र में बुवाई के पहले बीज को *मेलाथिओन* के 0.1 प्रतिशत या *डाइमेथिओएट* 0.08 प्रतिशत घोल में 15 मिनट तक डुबोयें।
बुवाई के समय	1. पँक्तियों के बीच की दूरी 90 सेमी से बढ़ाकर 120 या 150 सेमी तक करें। 2. अन्तःफसली खेती करें जिससे माहू का वायु द्वारा प्रसार कम हो सके। 3. जैविक खाद या गोबर की खाद का अधिक प्रयोग करें जिससे रासायनिक नत्रजन की मात्रा कम की जा सके। 4. कीटनाशी रसायनों को कणों के रूप में प्रयोग करने पर परभक्षियों पर विपरीत प्रभाव कम पड़ता है।
प्रस्फुटन से जून तक	1. ऊनी माहू को ढूँढने के लिए नदी, तालाब या नम भूमि वाले स्थानों पर प्रगाढ़ सर्वेक्षण करना चाहिए। गन्ने के अतिरिक्त अन्य पौधों पर भी इसे ढूँढना चाहिए। यदि माहू का प्रकोप बहुत कम हो तो ग्रसित पत्तियों को छीलकर जला दें और इसके पश्चात् कीटनाशी जैसे– *मेटासिस्टॉक्स* (0.05 प्रतिशत) या *इन्डोसल्फॉन* (0.05 प्रतिशत) का प्रयोग 2 बार 15 दिन के अन्तराल पर करें। 2. नत्रजन का प्रयोग कम करें। 3. घास व खरपतवार पर नियंत्रण रखें। 4. सिंचाई का प्रयोग कम करें और जल का भराव न होने दें।
जुलाई से अक्टूबर	1. कीटनाशी रसायनों का प्रयोग बिल्कुल न करें। 2. माहू के परभक्षियों को माहू ग्रस्त गन्ने के खेत में ढूँढें। परभक्षियों में *डाइफा एफिडिवोरा* एवं *माइक्रोमस इगोरोटस* बहुत प्रभावशाली हैं। इनको एकत्र करके, उन खेतों में वितरित करना चाहिए जहाँ इनकी संख्या कम हो (परभक्षियों के संरक्षण व संवर्द्धन एवं उनके वितरण के लिए एजेन्सियों को आगे आना चाहिए)। 3. गन्ने में बंधाई करें जिससे गन्ना न गिरे और हवा का प्रवाह खेत के अन्दर बना रहे। 4. अधिक सिंचाई न करें और फसल की अन्तःनमी अधिक न होने के उपाय करें।
नवम्बर से कटाई तक	1. माहू ग्रस्त फसल को अतिशीघ्र काटने की व्यवस्था करें और शीघ्र पेराई के लिए भेजें। 2. माहू ग्रस्त फसल को बीज के लिए प्रयोग न करें और अन्य क्षेत्रों में न ले जायें। 3. कटाई उपरान्त, खेत में फसल अवशेषों को जला दें।
पेड़ी फसल	1. ऊनी माहू से ग्रस्त पेड़ी फसल की दोबारा पेड़ी न लें और फसल चक्र में कोई अन्य फसल को लें। 2. यदि पूर्व फसल में माहू के साथ–साथ उसके परभक्षी भी पाये गऐ हों तो कीट नाशक दवा का प्रयोग न करें।